

Dr•Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja College Ara
Date; 31/10/2025
Class: P.G Semester - 3rd
(C.C-12)
Educational Psychology,

Topic - वैयक्तिक भिन्नता के प्रकार या क्षेत्र
(Kinds or Areas of Individual Differences)

(1) शारीरिक विकास में विभिन्नता (**Physical Growth and Development**) वैयक्तिक भिन्नता का सबसे पहला उदाहरण शारीरिक विकास की क्रिया है। विकास के दो सोपान होते हैं एक जन्म से 3 वर्ष की आयु तक और दूसरा 3 से 6 वर्ष की आयु तक। इस अवस्था में बालक का शारीरिक विकास बड़ी तेजी से होता है। पर, अगर उचित भोजन, निद्रा, पालन-पोषण साफ सफाई में अन्तर होता है त दो बच्चों के शारीरिक विकास पर असर पड़ता है और शारीरिक विकास में भिन्नता पायी जाती है।

(2) मानसिक विकास में विभिन्नता (**Differences in Mental growth**) - उम्र के साथ-साथ मानसिक विकास होता है, पर मानसिक विकास की गति में भी व्यक्तिगत भिन्नताएँ पायी जाती हैं बच्चे का मानसिक विकास उनकी बुद्धि के द्वारा निर्धारित होता है। फ्रीमैन तथा फ्लोरी 1967 (Freeman and Flory) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह सिद्ध किया कि बुद्धि स्तर पर भिन्नता के कारण बच्चे का मानसिक विकास अलग-अलग होता है। बच्चे में बुद्धि का विकास शैशवावस्था में ही होने लगता है, पर एक ही आयु ने भिन्न-भिन्न बच्चों के बौद्धिक स्तर में अन्तर स्पष्ट दिखायी देता है। मानसिक विकास या बुद्धि के कारण ही कुछ बच्चे प्रखर होते हैं, कुछ सामान्य और कुछ मंदबुद्धि। कैटेल (Catell) एवं स्पीयरमैन (Spearman) हार्न (Horn) और गार्डनर (Gardener) ने अध्ययनों द्वारा यह सिद्ध किया है कि बुद्धि के क्षेत्र में वैयक्तिक भिन्नता बहुत अधिक पायी जाती है। उनके अनुसार बुद्धि समस्याओं को सुलझाने, किसी भी चीज को ग्रहण करने और नये कौशल को सीखने की क्षमता है। इन्हीं क्षमताओं के आधार पर ही बच्चे एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। कभी-कभी मानसिक विकास में अन्तर वातावरण के कारण भी आती है। परिवार, पड़ोस, स्कूल इत्यादि कई ऐसे कारक होते हैं जो बच्चे के मानसिक विकास पर प्रभाव डाल सकते हैं।

(3) सांवेगिक विभिन्नता (**Differences related to emotions**) - संवेग का शाब्दिक अर्थ है उत्तेजित कर देना। अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने इसे अलग-अलग परिभाषित किया है। वुडवर्थ (Woodworth-1949, P. 344) के अनुसार, 'संवेग शरीर की आंदोलित अवस्था है।' "प्रत्येक संवेग एक अनुभूति है और प्रत्येक संवेग उसी समय एक गत्यात्मक तत्परता है।" (Each emotion is feeling and each is, at the same time a motor set.) संवेग की अवस्था में कभी-कभी अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ भी पायी जाती हैं।

(4) सामाजिक विकास में विभिन्नता (**Differences related to socialization and social behaviour**) - व्यक्ति द्वारा व्यवहार के परम्परागत प्रतिमानों को ग्रहण करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहते हैं (V. V. Akolkar) समाजीकरण के कारण ही व्यक्ति तौर तरीके, शिष्टाचार, बोलचाल उठना-बैठना आदि सामाजिक व्यवहार सीखता है। इसी आधार पर, व्यक्ति का समाजीकरण भी उन्हें एक दूसरे से भिन्न बनाता है। बच्चे का व्यक्तित्व बहुत कुछ उनके सामाजिक पर्यावरण पर निर्भर करता है। सभी बच्चों का समूह-व्यवहार (group behaviour) एक तरह का नहीं होता। कोई मिलनसार होता है और समूह में अपने आपको अच्छी तरह अभियोजित कर लेता है। कुछ लोग संकोची होते हैं और अपने आपको अलग-अलग कर लेते

हैं। कुछ व्यक्तियों में नेतृत्व गुण होते हैं और कुछ सामाजिक कार्यों में भाग लेने से भी घबड़ाते हैं। उनके नैतिक और चारित्रिक गुणों में भी विभिन्नता पायी जाती है। इन विभिन्नताओं के कारण उनके व्यक्तित्व विकास में भी विभिन्नता पायी जाती है।

(5). अभिरूचि में विभिन्नता (Differences in interest) अभिरूचि एक ऐसी धुरी है जो सीखने और सिखाने दोनों क्रियाओं का संचालन करती है। व्यक्ति की अभिरूचि जिसमें होती है, वह उस विषय को अच्छी तरह सीख लेता है और उसे जीवन पर्यन्त याद रखता है। क्रो एण्ड क्रो (Crow & Crow) के अनुसार 'अभिरूचि वह प्रेरणात्मक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा क्रिया की ओर आकर्षित करती है।' ('Interest refers to motivating force that impel as to attend is a person a thing or an activity'). व्यक्तिगत अभिरूचि के कारण हम समूह में भी एक व्यक्ति, वस्तु अथवा क्रियाओं के प्रति आकर्षित होते हैं। अभिरूचि में भिन्नता के कारण वैयक्तिक भिन्नता स्पष्ट दिखायी देती है। अपने चारों ओर के वातावरण में इस तरह के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। किसी की रुचि विज्ञान में होती है तो किसी की साहित्य में। कोई संगीतज्ञ बनना चाहता है तो कोई चित्रकार। प्रत्यक्ष उदाहरण तो T.V. show के दौरान देखने को मिलता है जहाँ किसी की रुचि क्रिकेट में है तो किसी की कार्टून चैनल में। कुछ लोग अन्ताक्षरी या संगीत कार्यक्रम देखना पसन्द करते हैं तो कुछ लोगों को फिल्में या सीरियल पसन्द है। संगीत प्रोग्राम में भी किसी को Z-IV का प्रोग्राम पसन्द है तो किसी को 'सोनी टीवी का। सबकी रुचियाँ भिन्न होती है और यह भिन्नता उनके वैयक्तिक भिन्नता का कारण होती है।

(6) मनोवृत्ति में भिन्नता (Differences in Attitude) मनोवृत्ति एक विशेष प्रकार के भाव को कहते हैं। मनोवृत्ति एक ऐसी प्रवृत्ति है, जिसके कारण व्यक्ति चाहे किसी अवस्था में हो किसी व्यक्ति के बारे में एक खास तरह का व्यवहार करता है। अपनी मनोवृत्ति के कारण ही हम किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में सकारात्मक (positive) या नकारात्मक (negative) विचार रखते हैं। उदाहरण स्वरूप हिन्दुओं का मुसलमानों के प्रति एक विशेष प्रकार का भाव होता है। किसी भी समूह या जाति विशेष के प्रति हमारी मनोवृत्ति हमारे गत अनुभव (past experience) पर आधारित होती है। उस व्यक्ति में वे गुण या दोष होया नहीं हम अपनी मनोवृत्ति के कारण ही किसी व्यक्ति को पसन्द या नापसन्द करते हैं। यह किसी भी व्यक्ति, समूह अथवा राष्ट्र के प्रति हो सकती है।

(7). अभिक्षमता में भिन्नता (Differences in aptitude) अभिवृत्ति मानव क्षमता का प्रमुख अंश है। व्यक्ति की अभिक्षमता के कारण, व्यवहार में एक विचित्र प्रकार की समानता, असमानता, एकरसता एवं विभिन्नता पायी जाती है। अभिक्षमता विशेषताओं के उस समूह को कहते हैं, जिसे व्यक्ति अपने विशेष ज्ञान को ग्रहण करने की क्षमता (acquire) संतुलित प्रतिक्रिया एवं कौशल द्वारा प्रदर्शित करता है। अभिक्षमता के कारण ही कोई व्यक्ति संगीतकार, कुशल वक्ता या यांत्रिक कुशलता प्राप्त करता है। अभिक्षमता में भिन्नता के कारण ही बच्चे की प्रतिभा का पता लगाया जा सकता है, उसे सही शिक्षा देकर अभ्यास के द्वारा सही मार्गदर्शन किया जा सकता है। पहले माता-पिता यह तय करते थे कि भविष्य में बच्चे को क्या बनाना है। शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से अब शिक्षक बच्चे की छुपी अभिक्षमता का पता लगाते हैं और उसी के आधार पर उन्हें प्रशिक्षण देकर निपुण बनाने की चेष्टा करते हैं। किसी भी बच्चे को संगीतकार नहीं बनाया जा सकता। उनकी अभिक्षमता की विभिन्नता को परख कर उन्हें शैक्षिक एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण (training) दी जा सकती है।

(8) मूल्यों में विभिन्नता (Differences in values) हमारे जीवन दर्शन में कई मूल्यों का समावेश होता है। इनमें से कुछ सामाजिक होते हैं, कुछ नैतिक एवं आध्यात्मिक, कुछ वातावरण जनित एवं परिस्थितिवश होते हैं। दूसरे शब्दों में, हम अपनी जरूरतों के अनुसार शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़े होते हैं। जीवन के मूल्यों में भी जरूरतों के आधार पर भिन्नता पायी जाती है। हम उसी वस्तु को महत्व देते हैं जिसकी हमें आवश्यकता होती है और अपने मूल्यों में materialistic रहते हैं। एक बेरोजगार की जिन्दगी में अर्थोपार्जन ही उसका वास्तविक मूल्य है, समाज सुधार नहीं। मानवीय एवं आध्यात्मिक मूल्य पूरे विश्व में एक समान हैं।

(9) आकांक्षा में भिन्नता (Differences in level of aspiration)-आकांक्षा इच्छापूर्ति की कुंजी है जो जीवन में प्रगति एवं सफलता लाती है। आकांक्षा के बिना कुछ भी पाना असंभव है। प्रत्येक व्यक्ति में एक प्रबल आन्तरिक इच्छा या आकांक्षा (inner urge) होती है, जो उन्हें प्रगति की ओर अग्रसर करती है। आकांक्षा तीव्र और शिथिल दोनों प्रकार की होती है। एक ही परिवार में एक भाई की आकांक्षा, एक सफल व्यवसायिक बनकर खूब पैसा कमाने की होती है तो दूसरा भाई अपनी साधारण सी नौकरी से संतुष्ट रहता है। आकांक्षा में एक संतुलन होना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, इच्छाओं की पूर्ति एवं आकांक्षा के स्तर में एक सामंजस्य होना चाहिए। एक व्यक्ति की आन्तरिक क्षमता से ऊपर आकांक्षा रखना घातक भी हो सकता है। इसका उदाहरण हम अपने चारों ओर देखते हैं। पैसा कमाने की तीव्र आकांक्षा से व्यक्ति कई अनैतिक एवं असामाजिक कार्य करने लगता है। किसी लक्ष्य या वस्तु को पाने की तीव्र आकांक्षा ही एक व्यक्ति को दूसरे से भिन्न बनाती है।

(10) आत्म-धारणा में भिन्नता (Differences in self concept)- मनोवृत्ति की समाग्रता (totality of attitudes) व्यवहार सम्बन्धी निर्णय एवं मूल्य तथा व्यक्ति की योग्यता को आत्म धारणा कहते हैं। "The totality of attitudes, judgement and values of an individual relating to his behaviour, abilities and qualities may be referred to his self concept." अपने इन्हीं गुणों के कारण व्यक्ति अपने प्रति एक धारणा बनाता है। आत्म धारण प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग पायी जाती है। व्यक्ति अपने अनुभवों एवं मूल्यों के आधार पर अपने बारे में निर्णय लेता है और अपने स्वयं का निर्माण करता है। प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव और निर्णय की शक्ति अलग होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की आत्म धारण या self concept भी भिन्न होता है।

(11) उपलब्धियों में विभिन्नता (Difference in achievement) प्रत्येक व्यक्ति अपनी उपलब्धियों के आधार पर एक-दूसरे से भिन्न होता है। किसी भी शिक्षण में चाहे वह professional हो या occupational एक व्यक्ति अपनी उपलब्धियों के अनुसार एक-दूसरे से भिन्न होता है। एक ही उम्र, समान बुद्धि एवं एक ही कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि एक समान नहीं होती। एक ही अवस्थामें एक तरह के शिक्षण के बावजूद भी, कुछ बच्चों की उपलब्धि अधिक होती है, और कुछ की अत्यन्त कम। ज्यादातर बच्चे सामान्य श्रेणी के होते हैं। स्किनर, 1962 (Skinner-1962) तथा बेले (Bayley-1991) ने इस दिशा में कई अध्ययन किये और पाया कि उनकी उपलब्धि में भिन्नता मुख्यतया उनकी अभिरुचि प्रेरणा और अभ्यास में कमी के कारण होती है। कभी-कभी उपलब्धि में भिन्नता का स्वरूप बिल्कुल अलग (unique) होता है। एक बच्चा सभी कठिन विषयों में अच्छे अंक लाता है, पर हिन्दी में (जो उसकी मातृभाषा है) कमजोर होता है। उसकी रुचि हिन्दी में नहीं है इसलिए इस विषय में उसकी उपलब्धि कम है।

(12) व्यक्तित्व विभिन्नता (Differences in personality development) व्यक्ति के साक्षेप रूप से (relatively) अनूठे (unique) एवं स्थिर व्यवहार (stable pattern of behaviour) विचार (thought) एवं संवेग (emotion) को व्यक्तित्व कहते हैं। (Baron 1993) समाज में व्यक्तित्व में विभिन्नता का प्रत्यक्षण सभी कोई कर सकता है। शीलगुणों के आधार पर कुछ लोग अंतर्मुखी होते हैं तो कुछ बहिर्मुखी। किसी में कुशल नेतृत्व के गुण पाये जाते हैं तो कुछ में पद चिह्नों पर चलने (follower) के। कुछ लोगों में ऐसे विशेष शीलगुण होते हैं जो उन्हें विख्यात बनाते हैं। Cattell (1945) ने इसे कार्डिनल गुण (Cardinal trait) का नाम दिया है। महात्मा गाँधी के जीवन की सादगी एवं दृढ़ निश्चय ने उन्हें विश्व विख्यात बनाया।

इसके अलावा उनके ज्ञानात्मक एवं क्रियात्मक क्षमताओं में भी विभिन्नता पायी जाती है। पढ़ने की शैली में भी भिन्नता पायी जाती है। शिक्षा मनोविज्ञान इन भिन्नताओं को ध्यान में रखकर उचित शिक्षा पद्धति का निर्माण कर, सीखने वाले को उचित परामर्श देता है। इतना तो तय है कि वैयक्तिक भिन्नता का प्रभाव शिक्षार्थी के व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर पड़ता है पर व्यक्ति कितनी मात्रा में एक-दूसरे से भिन्न है? ये विभिन्नताएँ जनसंख्या में कैसे वितरित होती हैं? इत्यादि बहुत से प्रश्न उभर कर सामने आते हैं। मनोवैज्ञानिकों ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह सिद्ध किया है कि विभिन्नताओं का वितरण normal probability curve के अनुसार होता है। व्यक्ति की

लम्बाई, वजन, सुन्दरता, बुद्धि और व्यक्तित्व के दूसरे अन्य गुणों का वितरण समाज में समान रूप से ही होता है।